को साधारण मानव समझने वाले अनीश्वरवादी भी इस प्रकार जान जाते हैं कि श्रीकृष्ण अतिमानवीय हैं, उनका श्रीविग्रह सच्चिदानन्दमय एवं दिव्य है, तथा वे देश, काल और प्राकृतिक गुणों के अधिकार से पर हैं। अर्जुन की कोटि के कृष्णभक्त को श्रीकृष्ण के दिव्य स्वरूप के सम्बन्ध में कदापि भ्रम नहीं हो सकता, यह निश्चित है। भक्तराज अर्जुन का श्रीभगवान् के समक्ष इस जिज्ञासा को उपस्थित करना उन व्यक्तियों की अनीश्वरता को एक भक्त की चुनौती है, जो श्रीकृष्ण को प्राकृतिक गुणों के आधीन साधारण मनुष्य समझते हैं।

24/3

श्रीभगवानुवाच।
बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप।।५।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **बहूनि**=अनेक; **मे**=मेरे; **व्यतीतानि**=हो चुके हैं; **जन्मानि**=आविर्भाव; **तव**=तेरे; **च**=भी; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **तानि**=उन; **अहम्**=मैं; **वेद**=जानता हूँ; **सर्वाणि**=सबको; **न**=नहीं; **त्वम्**=तू; **वेत्थ**=जानता; **परंतप**= हे शत्रुविजयी।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म व्यतीत हो चुके हैं। मुझे तो उन सबकी स्मृति है, पर हे परंतप! तू उन्हें नहीं जानता।।५।।

तात्पर्य

ब्रह्मसंहिता से हमें श्रीभगवान् के नानाविध अवतारों की जानकारी मिलती है। वहाँ (ब्र० सं० ५.३३) कथन है—

अद्वैतमच्युतमनादिमनन्तरूपमाद्यं पुराणपुरुषं नवयौवनं च।
वेदेषु दुर्ल्लभमदुर्ल्लभमात्मभक्तौ गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

'मैं आदिपुरुष भगवान् गोविन्द का भजन करता हूँ, जो अद्वैत, अच्युत, अनादि हैं तथा अनन्तरूप होते हुए भी आद्य, पुराणपुरुष और नित्य नवयौवन-युक्त रहते हैं। श्रीभगवान् के सच्चिदानन्दमय रूपों को प्रायः वेदों के पारगामी विद्वच्चूड़ामणि जानते हैं, पर विशुद्ध अनन्य भक्तों को ... उनके दर्शन नित्य ही प्राप्त रहते हैं।'

ब्रह्मसंहिता में ही (५.३९) कहा है—

रामादि मूर्तिषु कलानियमेन तिष्ठन् नानावतारमकरोद्भुवनेषु किन्तु।।
कृष्णः स्वयं समभवत् परमः पुमान्यो गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि।।

'मैं भगवान् श्रीगोविन्द का भजन करता हूँ, जो राम, नृसिंह आदि अवतारों और अंशावतारों में नित्य अवस्थित रहते हुए भी कृष्णनाम से विख्यात आदिपुरुष हैं और जो स्वयं (अपने आद्य रूप में) भी अवतरित होते हैं।'

वेदों में भी कहा है कि अद्वय होते हुए भी श्रीभगवान् असंख्य रूपों में प्रकट होते हैं। वे उस वैदर्यमणि के समान हैं जो अपना वर्णपरिवर्तन करने पर भी स्वरूप से,